

डॉ. हेडगेवार का राष्ट्रीय के प्रति सामाजिक प्रयास: एक अध्ययन

निगेश्वर नाथ¹ (शोध विद्यार्थी)

डॉ. श्वेता राय² (पर्यवेक्षक)

राजनीति विज्ञान विभाग

^{1,2} सिक्किम प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, गंगटोक, (सिक्किम)

शोध सारांश:-

सामाजिक सामंजस्य उन शक्तियों को कहते हैं जो समुदाय और राष्ट्रीय स्तर पर व्यक्तियों को एक साथ बांधती हैं। सामाजिक सामंजस्य में सामाजिक प्रक्रियाओं का एक समूह शामिल होता है जिसमें समान मूल्य, नागरिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक भागीदारी शामिल होती है। समान अवसर और अपनेपन की भावना। सामाजिक सामंजस्य सकारात्मक जनसंख्या परिणामों (जैसे स्वस्थ, शिक्षित और उत्पादक समुदाय) से जुड़ा हुआ है। इसे एक राष्ट्र के नागरिकों द्वारा रखे गए विश्वास के रूप में भी समझा जा सकता है कि वे एक नैतिक समुदाय को साझा करते हैं, जो उन्हें एक-दूसरे पर भरोसा करने में सक्षम बनाता है। इसलिए डॉ. हेडगेवार का मिशन हमारे लोगों को राष्ट्रीय चरित्र और सामंजस्य की सच्ची भावना से भरना था। जाति, अस्पृश्यता आदि जैसी सभी सामाजिक बुराइयाँ, जिन्होंने पिछली कई शताब्दियों के दौरान हमारे राष्ट्र को बाधित और कमजोर किया है, उन्हें मिटा दिया जाना चाहिए और हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के उदात्त और जीवन-निर्वाह मूल्यों को विकसित किया जाना चाहिए। यह किसी विशेष जाति या वर्ग, लिंग या पंथ, प्रांत या राजनीतिक दल तक सीमित नहीं था।

मूल शब्द:- डॉ. हेडगेवार, राष्ट्रीय, सामाजिक प्रयास इत्यादि।

भूमिका:-

भारत एक बहु-समाज देश है, जहाँ बहु-धार्मिक, बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक संरचना वाला बहुलवादी समाज है। यह विविधता जातीयता और संस्कृति, भाषा और धार्मिक समायोजन सहित कई तरीकों से प्रकट होगी। सामाजिक सामंजस्य के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों में अनुभव किए गए संकटों से बचा जा सकता है। ऐसे समाज में शांति केवल सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देकर ही सुनिश्चित की जा सकती है। वर्तमान में दुनिया के अधिकांश देशों में सामाजिक सामंजस्य का संकट उल्लेखनीय है। पहला अवलोकन बढ़ती गरीबी के कारण बढ़ती असमानता है। लाखों लोग या तो बेरोजगार हैं या कम रोजगार वाले हैं। पारिवारिक जीवन का टूटना, अनियंत्रित शहरीकरण और विकसित और अविकसित दोनों देशों में पारंपरिक पड़ोस की एकजुटता का पतन। अब यह समाज के प्रति हमारे दृष्टिकोण का सवाल बन गया है। यह स्पष्ट है कि समाज का कल्याण व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन की सुरक्षा और सुविधा पर निर्भर करता है। यहां तक कि व्यक्तियों की नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी सामाजिक शांति और सुरक्षा के बिना बाधा बन जाती है, यहां तक कि आध्यात्मिक रूप से महान व्यक्ति के लिए भी, यदि समाज बिखर जाए तो जीवित रहना कठिन हो जाता है। ऐसे में यह

देखना हमारा पहला कर्तव्य है कि हमारा सामाजिक जीवन कैसे स्वस्थ बने। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) डॉ हेडगेवार द्वारा स्थापित एक बहुत ही प्रसिद्ध संगठन है।¹ दशकों पहले, बीबीसी ने घोषणा की कि यह सबसे व्यापक और सबसे बड़ा गैर-सरकारी स्वैच्छिक संगठन है जो भारत में हिंदू एकीकरण के लिए काम कर रहा है। तब से आरएसएस कई अनुपातों में विकसित और फैला है। लेकिन अभी भी, संघ के बाहर बहुत कम लोग इस शक्तिशाली संगठन के संस्थापक डॉ केशव राव बलिराम हेडगेवार के बारे में जानते हैं, जिन्हें 'डॉक्टरजी' के नाम से जाना जाता है।

डॉ. हेडगेवार जन्मजात देशभक्त थे और जीवन के आरंभ से ही सामाजिक और देशभक्तिपूर्ण गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। वे मेडिकल स्नातक थे, मेडिकल की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने एक दिन भी वकालत नहीं की, हालांकि वे लंबे समय तक गरीबी में रहे और आर्थिक रूप से बहुत कठिन परिस्थितियों से गुजरे। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने केवल देश के लिए जीने और इसके भले के लिए काम करने की इच्छा की। कलकत्ता से लौटने के बाद, उन्होंने नागपुर और आस-पास के क्षेत्रों में काम किया और 1922 में प्रांतीय कांग्रेस के संयुक्त महासचिव के पद तक पहुंचे। वे बहुत ही प्रखर वक्ता थे; उनके तीखे शब्दों ने युवाओं को आकर्षित और प्रेरित किया, जिसके लिए उन्हें राजद्रोह के आरोप का सामना करना पड़ा और उन्हें अदालत में घसीटा गया, जहाँ उन्होंने जोरदार तरीके से अपना बचाव किया। पीठासीन न्यायाधीश ने कहा कि "उनका बचाव उनके मूल भाषण से भी अधिक राजद्रोही है"। अपने बचाव तर्कों से संतुष्ट न होकर डॉ. हेडगेवार ने एक संक्षिप्त भाषण दिया। स्थान की कमी के कारण, उस भाषण के केवल कुछ वाक्य यहाँ उद्धृत किए जा रहे हैं। "भारत भारतीयों का है; इसलिए, हम स्वतंत्रता की माँग करते हैं।"²

एकजुटता की आवश्यकता

इस समय तक हेडगेवार को यह अहसास हो चुका था कि हिंदुओं में एकजुटता और स्वाभिमान की कमी ही मुख्य राग है। इसलिए एकमात्र स्थायी समाधान हिंदू चेतना को स्वाभिमान, एकता और साहस के रूप में ढालना था। अंग्रेजों के बाहरी खतरे से अधिक, हिंदू समाज के आंतरिक मतभेद और अनुशासनहीनता का अभिशाप उन्हें सबसे अधिक चिंतित कर रहा था।

1925 में जो माहौल था, उसमें कई राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदुओं को संगठित करने की आवश्यकता महसूस की। कुछ अन्य लोगों ने डॉक्टर जी के प्रयासों को "सांप्रदायिक" "बचकाना"³ आदि कहकर संदेह भी जताया। फिर भी, डॉक्टर जी शांत और अविचलित रहे। उन दिनों की घटनाओं का विश्लेषण करने के बाद उन्होंने जो मिशन की कल्पना की थी, उसकी सार्थकता पर उनका दृढ़ विश्वास था। उनका मन गहरे सवालों के जवाब खोजने में लगा हुआ था। हमारे राष्ट्र का वास्तविक स्वरूप क्या है; हम वास्तव में किस स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं? इसकी विशेषताएँ क्या हैं? और फिर, हमारे राष्ट्रीय पतन और गुलामी का मूल कारण क्या है? डॉ. हेडगेवार ने अतीत के इतिहास का गहन अध्ययन किया और कुछ आधारभूत सत्यों को पहचाना। हमारा राष्ट्र प्राचीन है, यह विश्व के अन्य राष्ट्रों के उदय से बहुत पहले अस्तित्व में आया। जब पश्चिम के अधिकांश आधुनिक राष्ट्र जंगलों से बाहर नहीं निकले थे, और विश्व ने ईसा मसीह या मोहम्मद के बारे में भी नहीं सुना था, तब हमारा देश मानव गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र- विज्ञान, कला, वाणिज्य, दर्शन और अध्यात्म में अपनी उपलब्धियों के लिए विश्वव्यापी रूप से पूजनीय था। और यह सब मूल निवासियों, जिन्हें हिंदू लोग कहते थे, के अंतहीन प्रयासों और बलिदानों

से संभव हुआ। राष्ट्रीय पुनर्जागरण के सभी महान जनक इसी हिंदू राष्ट्र के झरने से जल पीते रहे और मुस्लिम तथा ब्रिटिश दोनों आक्रमणकारियों से लड़े। चाहे वह राणा प्रताप हों या शिवाजी, विद्यारण्य या गुरु गोविंद सिंह, विवेकानंद हों या अरबिंदो, तिलक हों या गांधी, सभी ने एक ही स्वर में बात की, एक ही हिंदू सहज भावना का आह्वान किया और लोगों को कार्य करने के लिए प्रेरित किया। डॉक्टर हेडगेवार ने निष्कर्ष निकाला कि यदि ब्रिटिश आधिपत्य और मुस्लिम अलगाव के दोतरफा हमलों का सामना करना है, तो एकमात्र प्रभावी उपाय हिंदू लोगों को जागृत और संगठित करना और उनमें राष्ट्रवाद की तीव्र भावना भरना है, क्योंकि उनका मानना था कि केवल ऐसी राष्ट्रीय शक्ति के आधार पर ही ब्रिटिश सत्ता को दबाया जा सकता है और मुसलमानों को यह एहसास कराया जा सकता है कि राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल होने से उनके हितों की बेहतर पूर्ति होगी। हमारे राष्ट्रीय जीवन के इस मूल तथ्य की अनुभूति ने ही डॉक्टर हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वैचारिक आधार तैयार किया।

सामाजिक एकता के लिए डॉ. हेडगेवार के प्रयास:-

डॉ. हेडगेवार का मिशन हमारे लोगों को राष्ट्रीय चरित्र और एकता की सच्ची भावना से भरना था। जाति, छुआछूत जैसी सभी सामाजिक बुराइयों को मिटाना था, जिन्होंने पिछले कई शताब्दियों के दौरान हमारे राष्ट्र को विघटित और कमजोर किया है और हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के उत्कृष्ट और जीवनदायी मूल्यों को विकसित करना था। यह किसी विशेष जाति या वर्ग, लिंग या पंथ, प्रांत या राजनीतिक दल तक सीमित नहीं होना था।⁴ इन सिद्धांतों के आधार पर डॉ. हेडगेवार ने सामाजिक एकता के लिए एक प्रकाश स्तंभ के रूप में काम किया। उन्होंने देश के बीच सामाजिक संघर्ष का मूल कारण खोजा। उनके अनुसार राष्ट्र की मूल बीमारी विदेशी गुलामी में नहीं बल्कि उसकी अपनी एकता में निहित है। यहां तक कि विदेशी प्रभुत्व भी सामाजिक प्रतिद्वंद्विता का प्रत्यक्ष परिणाम था। सदियों से हिन्दू समाज के पास अपार जनशक्ति, धन, शस्त्र तथा अन्य सभी साधन थे, किन्तु एक चीज का अभाव था, वह थी राष्ट्रीय चेतना, जो व्यक्ति को राष्ट्रहित में समर्पित होने के लिए उत्साहित करती। डॉ. हेडगेवार जानते थे कि इन संघर्षों के विपरीत, एक सशक्त हिन्दू चेतना के निर्माण के लिए 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) की स्थापना की गई। अतः संघ का उद्देश्य लोगों में राष्ट्रीय चरित्र तथा एकता की सच्ची भावना भरना था। जहाँ संघ द्वारा प्रचलित हिन्दू एकीकरण की भावना स्वदेशी अलगाववादी सिद्धांतों द्वारा उत्पन्न विघटनकारी कुशासन के लिए सशक्त उपदेश सिद्ध हुई है, वहीं संघ कार्टेलिज्म, अस्पृश्यता तथा संप्रदायवाद से उत्पन्न सामाजिक विषमताओं तथा विवादों को दूर करने में भी प्रभावी सिद्ध हुई है।

सामाजिक क्षेत्र में महिला सुधारक-

डॉ. हेडगेवार महिलाओं के साथ सामन्ती एवं परम्परावादी व्यवहार से आजीवन लड़ते रहे। वह महिलाओं को दया का पात्र नहीं बल्कि समानता एवं सम्मान का हकदार मानते थे। अपने व्यवहारिक जीवन में उन्होंने जो कदम उठाए थे वे एक क्रांतिकारी सुधारक के लिए ही सम्भव थे। वह बाल विवाह के विरोधी एवं विधवा विवाह के समर्थक तो थे ही उन्होंने 'बेमेल विवाह' का भी विरोध किया था। तत्कालीन समाज में कम उम्र की लड़कियों के साथ अधिक उम्र के दुल्हे के विवाह की कुप्रथा थी। एक बार जब उन्हें ऐसे बेमेल विवाह की सूचना मिली तब उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ जाकर बलपूर्वक उस विवाह को रोका। उस लड़की की शादी समान उम्र के लड़के से कराई। प्रसिद्ध मराठी उपन्यासकार गजाननराव

माडखोलकर ने अपनी आत्मकथा में यह रहस्योद्घाटन किया कि डॉ. हेडगेवार के प्रयास से ही उनके प्रेम विवाह में आई अड़चने दूर हो पाई थी। उन्होंने महिलाओं के लिए 'रमणी' शब्द के प्रयोग पर आपत्ति करते हुए 'देवी' शब्द के प्रयोग पर बल दिया था। डॉ. हेडगेवार के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। हिन्दु युवकों में संघ का बढ़ता हुआ काम देखकर वर्धा की एक महिला कार्यकर्ता तथा एक स्वयंसेवक की माताजी श्रीमती लक्ष्मीबाई उपाख्य मावशी केलकर को लगा कि स्त्रियों का भी ऐसा संगठन होना चाहिए।

उन्होंने अप्पाजी जोशी के माध्यम से सन् 1936 में डॉ. हेडगेवार से भेंट की। डॉ. हेडगेवार संघ के अन्तर्गत स्त्री विभाग प्रारम्भ करने के लिए तो सहमत नहीं हुए, किन्तु उन्होंने उनको हिन्दु महिलाओं का समानान्तर संगठन खड़ा करने की प्रेरणा दी। उन्होने यह भी इच्छा प्रकट की कि संस्था का नाम संघ से भिन्न किन्तु समानार्थी हो। रेल की पटरियों के समान ये दोनों संगठन समानान्तर चलते हुए भी एक दूसरे से प्रथक रहें। 25 अक्टूबर 1936 को विजयादशमी के दिन राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना हुई। श्रीमती मावशी केलकर ने इसका विस्तार किया। मावशी जी के दिवंगत होने के बाद पुणे की श्रीमती सरस्वती ताई आपटे ने इस समिति का संचालन किया। महिलाओं को सुसंगठित, तेजस्वी बनाने के लिए यह समिति तब से अब तक कार्यरत है। डॉ. हेडगेवार ने इसके कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए आरम्भ में कुछ कार्यकर्ता मार्गदर्शन के रूप में दिए थे। अब संस्था पूर्णतः आत्मनिर्भर है। डॉ. हेडगेवार महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका के प्रशंसक थे। संघ की शाखाओं एवं शिविरों में महिलाओं को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया जाता था। अखिल भारतीय महिला परिषद ने संघ के सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण का राज्य विधानसभा की उपसभापति अनसुया बाई काले भी थी, नागपुर के संघ शिविर में 28 दिसंबर 1936 को आए थे। यह कोई पहली घटना नहीं थी। इसके पहले भी सार्वजनिक जीवन में कार्यरत महिला नेताओं एवं समाज सेवियों को आमंत्रित किया गया था। कांग्रेस की नेता कमलाबाई ने 21 नवम्बर 1938 को कोंकण में संघ की शाखा में अपना भाषण दिया था। इसी प्रकार पार्वतीबाई चिटणवीस ने 9 दिसम्बर 1934 को संघ की नागपुर शाखा वार्षिक उत्सव में मुख्य अतिथि थीं। मध्यप्रान्त विधानसभा की मनोनीत सदस्या रमाबाई तांबे संघ के प्रशंसकों में थी। डॉ. हेडगेवार ने महिला कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास एवं हिम्मत पैदा करके उन्हें स्वतंत्र संगठन की नींव रखने के लिए प्रेरित किया था। मध्यप्रान्त में दो महिला संगठनों राष्ट्र सेविका समिति (वर्धा) और राष्ट्रीय स्वयं सेविका संघ (भंडाराक) की स्थापना 1935-36 में हुई थी। डॉ. हेडगेवार के प्रयास से ही अक्टूबर 1936 में दोनों संगठनों का विलय हो गया। डॉ. हेडगेवार महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक भूमिका के प्रति कितने जागरूक थे, इसका पता इस बात से चलता है। कि उन्होंने महिलाओं के अधिकार से लेकर के महिला संगठन तक उनकी सहायता की उन्हें जागरूक किया।⁵

निष्कर्ष:-

डॉ. हेडगेवार महान दूरदर्शी व्यक्ति थे। वे संस्कारों में जन्मे और पले-बढ़े। अपने महान संस्कारों के माध्यम से हम अपनी सामाजिक इकाई को नया आकार दे सकते हैं और एकजुट कर सकते हैं जो सामाजिक सामंजस्य का नेतृत्व कर सकता है। दूसरों की बुनियादी जरूरतों के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। सामाजिक सामंजस्य के बारे में डॉ. हेडगेवार का मूल सिद्धांत था कि अपने कर्तव्यों पर ध्यान दें, हमारे अधिकार स्वाभाविक रूप से सुरक्षित होंगे। समाज तुरंत एकजुट हो जाएगा। डॉ. हेडगेवार जाति और धर्म के बीच भेदभाव नहीं करते थे। सभी स्वयंसेवक हिंदू हैं, हालांकि वे अलग-अलग

जाति और धर्म के हैं। वे एक साथ खाते हैं, एक साथ रहते हैं और एक साथ खेलते हैं। वे सबसे अग्रणी राहत कार्यकर्ता थे, यहां तक कि अपनी भयानक गरीबी के बावजूद वे दान और वितरण में आगे रहते थे।

संदर्भ-सूची:-

1. अग्निहोत्री, रामशकर डॉ. हेडगेवार, एक बमत्कार, ज्ञानगंगा प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ सं-23
2. अष्ठाना, कृष्णकुमार संघ इतिहास के झरोखे से लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2005, पृष्ठ सं-45
3. आपटे, उमाकान्त केशव संघ चिन्तन, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं-26
4. आठले डॉ. बा.मो. हिन्दुत्व सम्पूर्ण जीवन दर्शन, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं-76
5. कुमार, विजय अपने परम पूजनीय सर संघ चालक, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ सं-90

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.